HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-III, (Kaling Naresh kharvel)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 67

"कलिंग नरेश खारवेल"

कलिंग राज्य के विषय में जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत अष्टाध्यायी, महाभारत, पुराण, रामायण, कालिदास कृत रघुवंश, महकाव्य, दण्डी का दशकुमारचरित, जातक, जैन ग्रंथ, उत्तराध्ययन सूत्र, टाल्मी का भूगोल, अशोक के लेख एवं खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख हैं।

हाथीगुम्फा अभिलेख से खारवेल के वंश एवं उनके पिता तथा पितामह के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती है । सम्पूर्ण अभिलेख में खारवेल का नाम इन उपाधियों- आर्य महाराज,

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

महामेघवाहन, कलिंग अधिपति श्री खारवेल तथा राजा श्री खारवेल के साथ उल्लिखित है।

15 वर्ष की अवस्था में खारवेल युवराज बना और 24 वर्ष की अवस्था में इसका राज्याभिषेक किया गया । खारवेल कलिंग के तीसरे राजवंश चेदि वंश का था । खारवेल को ऐरा, महाराज, महामेघवाहन एवं कलिंग अधिपति कहा गया। खारवेल ने अपने शासनकाल के दूसरे वर्ष शातकर्णी (सातवाहन) की उपेक्षा करते हुए कश्यप क्षत्रियों के सहयोग से 'यूषिक' राजाओं की राजधानी को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया । शासन काल के पांचवें वर्ष में खारवेल ने नंदो द्वारा खुदवाई नहर को अपनी राजधानी में मिला लिया। सम्भवतः शासनकाल के सातवें वर्ष में खारवेल ने अपना विवाह किया और साथ ही मसूलीपट्टम को जीता। अपने शासनकाल के आठवें वर्ष में खारवेल मगध पर आक्रमण कर बराबर पहाड़ी तक पहुंच गया । इसने बराबर पहाड़ी में स्थित गोरठगिरि किले को नष्ट किया। राजगृह पर आक्रमण किया। अपने शासन के 9वें वर्ष में ने खारवेल में ब्राह्मणों को सोने का कल्पवृक्ष भेंट किया। इस वृक्ष के पत्ते तक सोने के बने थे। शासन के इसी वर्ष में खारवेल ने प्राचीन नदी के दोनों किनारों

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

पर लगभग 35 लाख रजत मुद्राओं की लागत से विजय प्रसाद नामक एक महल बनवाया । शासन के ग्यारहवें वर्ष में खारवेल ने लकड़ी द्वारा निर्मित 13 सौ वर्ष पुरानी केतुभद्र की प्रतिमा के साथ एक जुलूस निकाला, इसके पूर्व यह प्रतिमा पृथु-दक-दर्भ शहर में स्थापित की । शासन के बारहवें वर्ष में खारवेल ने उत्तरापथ पर आक्रमण कर अंग और मगध से कीमती उपहार प्राप्त किया । इन उपहारों में प्रथम जिन की प्रतिमा तथा पद-चिह्न शामिल है जो नंद के पास था । खारवेल ने शासन के12 वर्ष में ही दक्षिण के पांडे राजाओं से हाथी घोड़े हीरे जवाहरात उपहार में प्राप्त किया। शासन के 13 वे वर्ष में खारवेल का झुकाव धर्म की ओर हुआ। जिसके परिणामस्वरूप कुमारी देवी पर अर्हतों के लिए उसने देवालय निर्मित करवाया। खारवेल शांति और समृद्धि का सम्राट, भिक्षु सम्राट और धर्मराज के रूप में जाना जाता था। संभवत खारवेल जैन धर्म का अनुयाई था। उदयगिरी का हाथी गुफा अभिलेख भारतीय इतिहास में मौर्यों के अध:पतन से लेकर गुप्तों के अभ्युदय के पहले के अंधकार युग को प्रकाशित करता है।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A N D College)